फरीदाबाद
# मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 275 1/- मई 2011

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी.एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

# समय का अकाल.....समय का काल

✱ ऋतु, रात और दिन, चार पहर, 24 घण्टे, एक घण्टे में 60 मिनट, एक मिनट में 60 सैकेन्ड, सैकेन्ड में विभाजन – माइक्रो सैकेन्ड। समय का विभाजन क्या हमारे समय का विस्तार है ? समय का विभाजन क्या हमारे समय की मृत्यु है ? काल मानी समय और काल मानी मृत्यु।

✱ समय के विभाजन और काम के बीच निकट रिश्ता है। अधिक काम और समय का बढता विभाजन साथ-साथ चलते नजर आते हैं। काम तो पौराणिक कथाओं का रक्तबीज है – जितना करो उतना ही बढता जाता है। समय के विभाजन का बढता सिलसिला, अधिक से और अधिक होता काम क्या मानव जीवन का विस्तार है ? क्या समय का बढता विभाजन, अधिकाधिक होता काम मानव जीवन को, पृथ्वी पर समस्त जीवन को विनाश की कगार पर ले आया है ?

हमारी गतिविधियाँ कब काम में बदली यह धुँधलके में है, पशुपालन के प्रारम्भिक दौर में हो सकता है। कृषि ने काम को स्थापित किया। फैक्ट्री उत्पादन घड़ी लाया। व्यापक समाज में आज समय और काम की स्थिति की एक झलक के लिये यहाँ अपने को दिल्ली-गुड़गाँव-फरीदाबाद में फैक्ट्री मजदूरों के दायरे में सीमित रखेंगे।

● आठ घण्टे ड्युटी वाले मजदूरों की सँख्या घट रही है। जब काम कम बताते हैं तब 12 घण्टे की ड्युटी सामान्य होती जा रही है। काम है मानी नाइट लगना, फुल नाइट लगना यानी सुबह 9 से रात 1 बजे तक, अगली सुबह 5 बजे तक काम करना। महीने में 15-20 नाइट, 5-7 फुल नाइट लग रही हैं की चर्चा वहाँ काम करने के लिये मजदूरों को आकर्षित करने का कार्य करती है।

● इतने समय खटते हैं खुराकी, कमरे के किराये, कपड़े-लत्ते, घर-परिवार को कुछ पैसे देने, दवा-दारू, बाहर चाय-ठण्डा-नाश्ता, मोबाइल, कर्ज पर ब्याज के लिये। बात लालच की नहीं बल्कि 12-16-20 घण्टे तन को तान कर और मन को मार कर किसी तरह दलदल में ज्यादा धँसने से बचने की है।

● फैक्ट्रियों में स्थाई मजदूरों की सँख्या घट रही है। टेम्परेरी वरकरों की गिनती सत्तर प्रतिशत को पार कर गई है। दो-चार-छह महीने में नौकरी छूटना सामान्य हो गया है। अधिकतर मजदूरों के लिये 12-16-20 घण्टे काम और खाली होना - काम की तलाश में होना सामान्य बातें हो गई हैं।

● अपने मकान वाले मजदूरों की सँख्या घट रही है। किराये के कमरों में रहने वाले मजदूरों की सँख्या बहुत तेजी से बढ रही है। एक कमरे में 4-5 का रहना। कमरे में ही भोजन बनाना। पचास-सौ के साथ साँझा नल और शौचालय।

● वाहन उद्योग हो चाहे कपड़ा उद्योग, हर क्षेत्र में काम की रफ्तार बढ रही है, काम का बोझ बढ रहा है। इलेक्ट्रोनिक्स का उत्पादन यन्त्रों में प्रवेश सामान्य हो गया है।

● तेज रफ्तार और लम्बे समय तक लगातार काम के कारण कार्यस्थलों पर एक्सीडेन्टों की सँख्या बढ रही है। निवास से फैक्ट्री आने-जाने के दौरान दुर्घटनायें बढ रही हैं। रहने और कार्य करने के स्थान बीमार करते हैं।

वस्तुस्थिति का यह बहुत संक्षिप्त बयान भी डरा देता है। लाखों फैक्ट्री मजदूर क्यों झेल रहे हैं इन हालात को ?

बहुत महीन ताने-बाने हमें जकड़े हैं। आज और अभी की चिन्ता भ्रमित करती है जबकि
– हमारी नींद तक पूरी नहीं हो रही।
– मिलने-जुलने का समय नहीं है।

आज की तुलना में बहुत धीमी और बहुत कम क्षमता वाली भाप-कोयले के दौर वाली मशीनों पर काम करते हमारे पुरखों ने आठ घण्टे काम, आठ घण्टे आराम, आठ घण्टे मन अनुसार गतिविधि के लिये मिल कर कदम उठाये थे। सवा सौ वर्ष पहले.....

इन सवा सौ वर्षों में काम की तीव्रता और क्षमता में वृद्धि चौंकाने वाली है। घड़ी इलेक्ट्रोनिक घड़ी बन गई है। परिणाम हैं : 1. आबादी के एक हिस्से का इस कदर काम के बोझ से दबना कि मरने तक की फुर्सत नहीं। 2. आबादी के दूसरे बढते हिस्से को फालतू बना देना, फालतू के ढेर में बदल देना।

फालतू के ढेर में धकेल दिये जाने का डर सर्वव्यापी और सर्वशक्तिशाली-सा बन गया है। अकेले-अकेले के हमारे प्रयास इसके सम्मुख असहाय हैं। अकेले-अकेले तो हम अपने-अपने तन-मन-मस्तिष्क को और अधिक तान ही सकते हैं.... इस कदर तन गये हैं कि खालीपन और अकेलापन महामारी बन गया है।

कारखाने वह स्थल हैं जहाँ मिल कर कुछ करना आवश्यक भी लगता है और सम्भव भी। इस कारखाने से उस कारखाने जाने का बढता चलन कई कारखानों के मजदूरों के लिये मिल कर कुछ करना सम्भव बनाता है। एक चीज का उत्पादन, उदाहरण के लिये कार का उत्पादन आज सैंकड़ों फैक्ट्रियों के उत्पादन को मिला कर होता है। यह इन सैंकड़ों फैक्ट्रियों के मजदूरों के लिये मिल कर कुछ करना आवश्यक बना देता है। जिस बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है उसने औद्योगिक क्षेत्रों का निर्माण जरूरी बना दिया है। औद्योगिक क्षेत्र के आधार पर मजदूरों द्वारा मिल कर कुछ करना सम्भव और आवश्यक हो गया है। औद्योगिक क्षेत्रों का ताना-बाना विश्व-भर में फैला है.......

तकनीकि विकास समय की बचत करेगा की बात व्यवहार में यह निकली है कि तकनीकि विकास हमारे समय को ही खा गया है। वायु, जल, जमीन का प्रदूषण संग-संग.....

कार्यरत को अधिकाधिक तानना और बड़ी सँख्या को फालतू के ढेर में बदलना दमन व नियन्त्रण के लिये एक बहुत बड़ी मशीनरी को जरूरी बना देता था। सवा सौ वर्ष पहले दुनियाँ में किसी भी सरकार के पास एक लाख की सँख्या वाली फौज नहीं थी। आज भारत सरकार के पास ही 13 लाख की थल सेना...... फिर वायु सेना..... जल सेना..... हमारे समय का एक-दो घण्टा तो तोप-गोले खा रहे हैं।■

**मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :**

*✱अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ✱ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ✱ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये–पैसे की दिक्कत है। महीने में एक बार छापते हैं, 9000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

# फरीदाबाद में मजदूर

**ओरियन्ट फैन मजदूर :** "प्लॉट 11 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में काम का बहुत दबाव है, बहुत तेजी से काम करना पड़ता है। पँखों का 2005 तक 6 महीने का सीजन था, 2005-2008 के दौरान यह 9 महीने का हो गया और अब तो पूरे वर्ष सीजन रहता है। महीने में 3 से 5 लाख पँखे बनाना – महीने में 100, 150, 250 घण्टे ओवर टाइम। महीने में 4-5 बार तो सुबह 8½ से रात 9 बजे तक काम के बाद पुनः रात 10 बजे से काम में जुट जाओ, सुबह 6 तक अथवा एक कनवेयर पर 2000 पँखे बनाने तक काम करो और सो जाओ...... सुबह 8½ से फिर काम आरम्भ करने के लिये। अब 5 कनवेयर हैं और इधर दो महीने से एक कनवेयर पर रात 8½ से अगली सुबह 9 की शिफ्ट भी आरम्भ कर दी है। लगातार 20-21 घण्टे काम करवाते हैं तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते। पँखा प्लान्ट में 50-60 स्थाई मजदूर हैं और यह ओवर टाइम की बजाय पीस रेट लेते हैं जो कि दुगुनी दर से ज्यादा पड़ता है। तीन सौ कैजुअल वरकरों और ठेकेदार के जरिये रखे 150 जॉब कार्ड वालों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से। ठेकेदारों के जरिये रखे 150 से ज्यादा अन्य मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और इधर तीन महीनों से ही इनकी ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू की हैं। एक ठेकेदार के जरिये रखे 15 मजदूरों की तनखा 3000-3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। पँखे की ब्लेड बनाने वाला प्लान्ट नया है और इसमें काम करते 100 मजदूर ठेकेदार के जरिये रखे हैं। बल्ब प्लान्ट में 300 से ज्यादा मजदूर......."

**फाइन टर्न श्रमिक :** "प्लॉट 240 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3500 और ऑपरेटरों की 4000-5000 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, महीने के तीसों दिन। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और घपला कर हर महीने 30-40 घण्टे खा भी जाते हैं। लोहे का बुरादा हटाने के लिये हैल्परों को दस्ताने नहीं देते। गाली देते हैं। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं। छोड़ने पर फण्ड के पैसे निकालने का फार्म नहीं भरते, चक्कर कटवाते हैं। पीने का पानी खारा है। शौचालय गन्दे। तनखा देरी से। यहाँ **जी ई मोटर (मैराथन मोटर), एल एम एल, रेवा ऑटो** की शाफ्ट बनती हैं।"

**फ्लैश इलेक्ट्रोनिक्स वरकर :** " प्लॉट 3, 8, 9 सैक्टर-27 बी स्थित फैक्ट्रियों में 28 अप्रैल को पावर प्रेस पर एक मजदूर की तीन उँगली कट गई। कम्पनी ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी। सैक्टर-16 में प्रायवेट अस्पताल में उपचार.... उत्पादन के लिये भारी दबाव, पुरानी खस्ताहाल पावर प्रेसें, लगातार 24 घण्टे चलती रहने के कारण मेन्टेनैन्स नहीं हो पाना, जगह की तंगी के मिले-जुले कारणों से 150 पावर प्रेसें मजदूरों के हाथ काटने में लगी हैं। इधर ई.एस.आई. का स्मार्ट कार्ड कैजुअल वरकरों के लिये आफत बन गया है। स्मार्ट कार्ड के लिये आवश्यक कागज कम्पनी नहीं देती और ई.एस.आई. में डॉक्टर कच्चे कार्ड पर दवाई नहीं देते, कहते हैं स्मार्ट कार्ड बनवाओ। कैजुअल वरकरों में से कुछ के नाम फ्लैश इलेक्ट्रोनिक्स में और कुछ के रेन्सन्स इण्डिया में रखे हैं। जनवरी से देय डी.ए. के 155 रुपये कम्पनी ने मार्च माह की तनखा में भी नहीं दिये।"

**उत्तम स्पेशल गैस कामगार :** " प्लॉट 41 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 4214 रुपये। गैस का काम है, जल जाते हैं। गर्म तरल के छींटों से जल जाते हैं। दस्ताने नहीं देते और प्राथमिक उपचार का प्रबन्ध भी नहीं। शौचालय बहुत-ही गन्दे, बाहर जाना पड़ता है।"

**जे बी एम वरकर :** " प्लॉट 269 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **जे सी बी** और **होण्डा** स्कूटर के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। स्थाई मजदूर 60 हैं। तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 650 मजदूरों में हैल्परों को 8 घण्टे रोज पर 30 दिन के 4000 रुपये देते हैं।"

**सुपर ऑटो मजदूर :** " प्लॉट 50 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **बजाज, होण्डा** दुपहियों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3500-4000 और ऑपरेटरों की 4000-5000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 200 की ही। शौचालय बहुत गन्दे।"

**रॉयल टूल्स श्रमिक :** " 74-75 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की एक शिफ्ट में 400 मजदूर **मारुति सुजुकी** और **होण्डा** के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। चार ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**डिलाइट प्रेसिंग वरकर :** "प्लॉट 302 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **एस्कोर्ट्स ट्रैक्टर** के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हस्ताक्षर 4610 रुपये तनखा पर करवाते हैं पर वास्तव में 3750 रुपये है और इन 3750 में से ई.एस.आई. तथा पी.एफ. की राशि काटते हैं।"

**श्याम स्टील मजदूर :** "सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 70 कैजुअल वरकरों की तनखा 3500-4000 रुपये। सात ठेकेदारों के जरिये रखे 100 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 3000-3200 रुपये।

● ***दिल्ली सरकार*** *द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार है : अकुशल श्रमिक 6084 रुपये (8 घण्टे के 234 रुपये); कुशल श्रमिक 7410 रुपये (8 घण्टे के 285 रुपये)।*

● **हरियाणा सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार है : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4503 रुपये (8 घण्टे के 173 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 5153 रुपये (8 घण्टे के 198 रुपये)।*

ओवर टाइम बहुत होता है, भुगतान सिंगल रेट से और गड़बड़ कर बीस प्रतिशत खा भी जाते हैं। यहाँ **ए बी बी मोटर** की बॉडी की ढलाई होती है।"

## आई एम टी (पेज तीन का शेष)

ने 24 व 25 अप्रैल को काम बन्द किया.... आगे हो कर बोल रहे तीन को कम्पनी ने नौकरी से निकाला..... 27 अप्रैल को पैसे दिये। डेढ़-दो वर्ष से काम कर रहे 250 मजदूरों को कम्पनी की प्लॉट 12 सैक्टर-5 फैक्ट्री से 25 मार्च को इस फैक्ट्री में भेजा..... इन मजदूरों का पी.एफ. नम्बर बदल दिया है।"

**ट्रैक ऑटो कम्पोनेन्ट्स मजदूर :** "प्लॉट 21 सैक्टर-7 स्थित फैक्ट्री में पानी की भारी समस्या है। भोजन अवकाश के समय ठण्डा तो क्या, गर्म पानी भी मुश्किल से मिलता है। ऊपर तपती चद्दरों की छत वाले प्रेस शॉप के हिस्से में 18 पावर प्रेस हैं और ...... एक भी पँखा नहीं है। यहाँ 18 अप्रैल को एक मजदूर की चार उँगली कट गई। **मारुति सुजुकी** की ऑडिट 26 अप्रैल को फैक्ट्री पहुँची तब मारुति डाई वाली 160 टन की पावर प्रेसों पर काम कर रहे मजदूरों को ही ईयर प्लग व हैल्मेट दिये...... और ऑडिट के जाते ही वापस ले लिये। प्रेस शॉप में लगातार भारी शोर से बहरे होने से बचने के लिये मजदूर कई बार ईयर प्लग माँग चुके हैं पर कम्पनी देती ही नहीं।"

**रोलैक्स हॉजरी श्रमिक :** "प्लॉट 24 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में काम करते 300 मजदूरों का महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम। जबरन रोकते हैं। ओवर टाइम के लिये मात्र 15 रुपये प्रतिघण्टा और यह भी 180 घण्टे का ही.....180 घण्टे से अधिक वाले ओवर टाइम के पैसे नहीं देते। गाली देते हैं, मारपीट भी। शौचालय गन्दा।"

**एडिगियर इन्टरनेशनल कामगार :** "प्लॉट 150 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में अप्रैल में बायरों के बहुत दौरे...... **पूमा** को हर सप्ताह 25,000 पीस चाहियें....... **जम्बूरी**.......आस्ट्रेलिया के लिये जीन्स. ....**वीवा**...... **आर एस एस** की वर्दी..... **एडिडास**। तनखा में देरी के विरोध में मजदूरों द्वारा मार्च में दो दिन काम बन्द करने के कारण कम्पनी ने मार्च का वेतन 7 अप्रैल को देने की तैयारी की थी लेकिन बायरों के दौरे बाधा बने क्योंकि कम्पनी बायरों को भी ओवर टाइम दिखाना नहीं चाहती। मार्च माह में 150-180 घण्टे ओवर टाइम में से 30 घण्टे ही दस्तावेजों में......साहब बोले कि तनखा ले लो, ओवर टाइम के पैसे बाद में दे देंगे पर मजदूर बोले कि इकट्ठे दो। ऐसे में मार्च की तनखा व ओवर टाइम 17-21 अप्रैल के दौरान दी गई। अधिक माँग के कारण काम का भारी दबाव.... फिनिशिंग विभाग में 300 से ज्यादा मजदूर हर शनिवार को सुबह 9½ बजे काम आरम्भ कर रविवार दोपहर 1 बजे तक काम करते रहे हैं, लगातार 27½ घण्टे काम। लगातार 27½ घण्टे काम पर एतराज करने पर कम्पनी ने 27 अप्रैल को फिनिशिंग इन्चार्ज को नौकरी से निकाल दिया।"

# गुड़गाँव में मजदूर

**एन आई आई टी टैक्नोलोजीज मजदूर:** "223-224 उद्योग विहार फेज-1 स्थित आई टी कम्पनी में छह-सात हजार वरकर हैं और हाउसकीपिंग में हम 33 मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते। मार्च माह में हमारी 8 घण्टे की तीन शिफ्ट थी और हमें 31 दिन के 3850 रुपये दिये। इधर 13 अप्रैल से हमारी 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट कर दी हैं और कहा है कि हमें 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 5800 रुपये देंगे। हम में किसी की भी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं।"

**मोडलामा श्रमिक :** " 105-106 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 8 की शिफ्ट है और फिर रात 10½, रात 2, अगली सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं। चार हजार से ज्यादा मजदूर यहाँ **गैप, ओल्ड नेवी, आई एम सी, डी के एन वाई, जेजिल** आदि-आदि का माल बनाते हैं। फिनिशिंग विभाग में कार्यरत 600-700 महिला मजदूरों की तनखा 3600-4000 रुपये, जबरन रात 10½ बजे तक रोक लेते हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, पुरुष व महिला सुपरवाइजर गाली देते हैं। पुरुष हैल्परों की तनखा 4200-4300 रुपये। उत्पादन वाले 3000 सिलाई कारीगरों (200 महिला हैं) में 1000 पीस रेट पर और दो हजार 4400-4500 रुपये तनखा पर। ढाई सौ सैम्पलिंग टेलरों की तनखा 4893 रुपये। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम...... स्थाई सिलाई कारीगरों को प्रतिदिन के 2 घण्टे ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से — इन 50 घण्टों में से 10 घण्टे तक ही पे-स्लिप में दिखाते हैं और पैसे तनखा के साथ देते हैं। फिर 15-20 तारीख के दौरान दो लिफाफे देते हैं — एक लिफाफे में दुगुनी दर वाले बचे पैसे और दूसरे में सिंगल रेट से पैसे रखते हैं। स्थाई हैल्पर, चेकर, प्रेसमैन की पे-स्लिप में 2 घण्टे ही ओवर टाइम के दिखाते हैं तथा उनका भुगतान ही दुगुनी दर से करते हैं और बाकी सब समय के पैसे सिंगल रेट से। कैजुअल वरकरों को पूरे ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। भविष्य निधि में भी कम्पनी गड़बड़ी करती है — पाँच वर्ष से तो पी.एफ. की पर्ची नहीं मिली है। साहब लोग गाली बहुत देते हैं। पानी ठीक नहीं। शौचालय बहुत-ही गन्दे।"

**ईस्टर्न मेडिकिट वरकर :** " उद्योग विहार में फेज-1 में 195, 196, 205, 206 तथा फेज-2 में 292 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों ने 20 अप्रैल से काम बन्द करना आरम्भ किया तब मार्च की तनखा 22 अप्रैल को दी। कैजुअल वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम के 18 रुपये प्रतिघण्टा...... फरवरी माह के ओवर टाइम के पैसों के लिये 10 अप्रैल को काम बन्द करना शुरू किया तब 12 अप्रैल को भुगतान किया।"

**सुरक्षा कर्मी :** "घोड़ा फार्म के पास, सैक्टर-23 में कार्यालय वाली **एस एल वी सेक्युरिटी** 27-28 हजार गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक अवकाश नहीं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 6000 रुपये हाथ में देते हैं — ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि काट कर। झपकी लेते देख लिया तो 300 रुपये काट लेते हैं।"

**ग्रैण्ड प्रिन्ट्स मजदूर :** "134 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से एक दिन रात 8 तक तथा दूसरे रोज रात 2 बजे तक काम। यहाँ सिगरेट डिब्बी, दवा पैकिंग आदि की औद्योगिक छपाई होती है। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से..... पर हैल्परों की तनखा 2200-2800 और ऑपरेटरों की 4000-5000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 300 मजदूरों में 50 की ही हैं।"

**नीलम इन्टरनेशनल श्रमिक :** "556 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में महिला मजदूरों (12-15 वर्ष की लड़कियाँ भी) को भी पूरी रात रोक लेते हैं। सुबह 9½ से रात 9 की ड्युटी रोज है और अगली सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हाथ का काम करती महिला मजदूरों की तनखा 4200 और सिलाई कारीगरों की 5500 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 500 मजदूरों में किसी की नहीं हैं। पुरुष व महिला मजदूरों का साँझा शौचालय — तीन मंजिला फैक्ट्री में नीचे मात्र दो शौचालय हैं, लाइन लग जाती है। तनखा देरी से, मार्च की 22 अप्रैल को दी। नौकरी छोड़ने पर किये काम के पैसों के लिये बहुत चक्कर कटवाते हैं।"

**ज्योति एपरेल्स कामगार:** "158 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में फिनिशिंग विभाग में 50-60 महिला मजदूर सुबह 9¼ से रात 9 तक और 150 पुरुष मजदूर रात 1 बजे तक काम करते हैं। महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम, सिंगल रेट से और गड़बड़ कर 2-4 मजदूरों के 200-400 रुपये खा भी जाते हैं। सिलाई कारीगर कभी तनखा पर, कभी दिहाड़ी पर, कभी पीस रेट पर। ई.एस.आई. व पी.एफ. 450-500 मजदूरों में किसी की भी नहीं हैं, स्टाफ के 50 लोगों की होंगी। जनरल मैनेजर गाली देता है। कैन्टीन नहीं है। पीने का पानी खराब। शौचालय गन्दे। बगल में प्लॉट 159 स्थित कम्पनी की फैक्ट्री में भी ऐसा ही।"

**हाउस ऑफ पर्ल वरकर :** "446 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में करीब 3000 मजदूर **जे सी पेन्नी, इम्पल्स** का माल बनाते है। सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट रोज है और रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। प्रतिदिन के 2 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी समय का सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. आधे से कम मजदूरों की है। इन्चार्ज बहुत गाली देता है। भोजन अवकाश के समय फैक्ट्री में पानी मिलता ही नहीं।"

**मोडलामा मजदूर :** " 201 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में काम करते 500 मजदूरों का महीने में 160-200 घण्टे ओवर टाइम, जबरन रोकते हैं। प्रतिदिन के दो घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी समय का सिंगल रेट से — गड़बड़ कर दस, बीस घण्टे खा भी जाते हैं। बहुत गाली देते हैं। नौकरी छोड़ने पर महीने-भर किये काम के पैसों के लिये बहुत चक्कर कटवाते हैं और बोनस देते ही नहीं। हैल्परों की तनखा 4349, चेकरों की 4489 और सिलाई कारीगरों की 4700-4800 रुपये।"

## आई एम टी मानेसर

**कुमार प्रिन्टर्स मजदूर :** "प्लॉट 24 सैक्टर-5 स्थित फैक्ट्री में कुछ पैसे कमाने के लिये एक मजदूर ने 10 दिन लगातार 16 घण्टे काम किया। भूख कम हो गई तब भी काम में जुटा रहा। ज्यादा बीमार हो गया..... 11 वें दिन नौकरी छोड़नी पड़ी। ओवर टाइम का भुगतान कम्पनी सिंगल रेट से करती है।"

**होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर श्रमिक:** "प्लॉट 1 व 2 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने दिसम्बर में उत्पादन बढाने के बाद 1 अप्रैल से फिर बढा दिया है। मोटर साइकिल प्लान्ट में लाइन दो पर एक शिफ्ट में 1000 की जगह 1025 की और अब 1100 गाड़ी बनाना निर्धारित। पानी पीने, पेशाब करने, साँस लेने का समय भी कम्पनी खा गई..... बढाये उत्पादन का लगभग पूरा बोझ ठेकेदारों के जरिये रखे 8000 मजदूरों पर और बदले में एक पैसा भी नहीं। भिवाड़ी में नई फैक्ट्री में यहाँ ठेकेदारों के जरिये रखों में से कुछ को कम्पनी स्थाई करेगी का भ्रम भी टूट गया है ..... इस्तेमाल करो और फेंको की कम्पनी की नीति अब साफ-साफ दिखने लगी है। मानेसर फैक्ट्री से 2010 में 18 लाख दुपहियों के उत्पादन लक्ष्य को कम्पनी ने 2011 में 20 लाख कर दिया है। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की बात न तो यूनियन और न ही मैनेजमेन्ट सुनती। लाइनों को कभी यहाँ पर तो कभी वहाँ पर मजदूर रोक रहे हैं. .... 16 अप्रैल को एक शिफ्ट में एक मोटर साइकिल लाइन कई बार रोकी गई, 1100 की बजाय 950 गाड़ियाँ ही बनी।"

**एस के एच कामगार :** " सैक्टर-8 आई एम टी में **मारुति सुजुकी** के चौथे गेट के अन्दर स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार को दिन में 12 घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। विशाल पावर प्रेसें (800 टन की) लाइन से लगी हैं। अलग-अलग डाई। आरम्भ में 1700 पीस तो आखिरी मशीन से भी 1700 पीस। मशीन बन्द नहीं होनी चाहिये। लाइन क्लीयर होनी चाहिये। पानी, पेशाब के लिये भी समय नहीं। बहुत मेहनत का काम, 15 किलो की शीट हाथों से उठानी पड़ती है। एक पीस रिजैक्ट पर बहुत झाड़।"

**कुरुबॉक्स वरकर :** "प्लॉट 153 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में फरवरी की तनखा 15 अप्रैल को जा कर दी और मार्च का वेतन आज 30 अप्रैल तक नहीं दिया है। दिसम्बर में किये ओवर टाइम के भुगतान के लिये मजदूरों **(बाकी पेज दो पर)**

# दिल्ली में मजदूर

**साहनी एक्सपोर्ट मजदूर :** "बी-144 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 12-1 बजे तक रोज काम, अगली सुबह 4 बजे तक रोक लेते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। महिला मजदूरों को रात 12 और पुरुष मजदूरों को रात 1 बजे छोड़ते हैं। महीने में 5-6 बार अगली सुबह 4 बजे तक सब पुरुष मजदूरों को रोकते हैं। महीने में 250 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम..... फरवरी माह में रात को कार्य करते-करते एक सिलाई कारीगर की मृत्यु हो गई। रात 12-1 तक कार्य पर रोटी के लिये 15 रुपये और अगली सुबह 4 बजे तक के लिये 25 रुपये देते हैं – उसी रोज नहीं बल्कि 20 दिन बाद यह पैसे देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ **बेला, गुडिनी, चियो, दहला** का माल बनता है। धागे काटने, मोती-सितारे लगाने, आल्टर के कार्य करती 100 महिला मजदूरों को 8 घण्टे के 125 रुपये। प्रेसमैनों को 8 घण्टे के 170 रुपये। दाग हटाने वालों की तनखा 5000, मेजरमेन्ट चेकर की 5500 तथा 150 सिलाई कारीगरों की 6000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 400 मजदूरों में 5-6 की ही हैं। पीने का पानी खराब। शौचालय गन्दे। यहाँ कम्पनी की बी-146 वाली फैक्ट्री का भी फिनिशिंग वाला कार्य होता है।"

**आर आर ट्रेन्ड्स श्रमिक :** "एक्स-1 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में काम का बहुत बोझ है – महिला मजदूर प्रत्येक घण्टे में 40 पीस के धागे काटे, चेकर हर घण्टे में 70 पीस जाँचे, सिलाई कारीगर का डिजाइन अनुसार प्रत्येक घण्टे का टारगेट। एक भी पीस कम होने पर लाइन इन्चार्ज, फिनिशिंग इन्चार्ज गाली देते हैं। प्रोडक्शन मैनेजर पहले पुचकारता है और कहता है कि तुम्हारे लिये एक-दो पीस का महत्व नहीं है पर कम्पनी के लिये बहुत महत्व है..... निर्धारित उत्पादन दो या बाहर जाओ। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन कम्पनी देती है पर एक जैसा काम करते सिलाई कारीगरों में 50 को 8 घण्टे के 285 रुपये और 200 को 259 रुपये देती है। काम सुबह 9 बजे आरम्भ होता है, सिलाई में रात 8½ तक तथा फिनिशिंग में रात 9½ तक रोज काम, रात 1 बजे तक, अगली सुबह 5 बजे तक रोक लेते हैं। तीसों दिन काम – रविवार को साँय 5½ छोड़ देते हैं। महिला मजदूरों को भी पूरी रात रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और फिनिशिंग विभाग मजदूरों के 500-700 रुपये हर महीने गड़बड़ कर खा भी जाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 400 मजदूरों में मात्र 5 की हैं। पीने के पानी में कीड़े।"

**लोटस इम्ब्राइड्री वरकर :** "बी-88 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, महीने के तीसों दिन। धागे काटने वाली 16-17 वर्ष की लड़कियों की सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी, रोज 11 घण्टे काम पर 26 दिन के 3500-3800 रुपये और रविवार के 115 रुपये अलग से। पुरुष हैल्परों को रोज 12 घण्टे पर 26 दिन के 4000-4500 तथा कम्प्युटर इम्ब्राइड्री ऑपरेटरों को 6000-7000 रुपये, रविवार के लिये अतिरिक्त पैसे। मैनेजर बहुत गाली देता है। ई.एस.आई. व पी.एफ. 80 मजदूरों में 10 की ही हैं।"

**श्री ओम इन्टरप्राइजेज मजदूर :** "ए-98/3 ओखला फेज-2 स्थित प्रिन्टिंग प्रेस में 150 मजदूरों की सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है, लगातार 36 घण्टे भी रोक लेते हैं। ओवर टाइम के 15-20 रुपये प्रतिघण्टा। हैल्परों की तनखा 3500-3600 तथा ऑपरेटरों की 5000-7000 रुपये। तनखा देरी से, फरवरी की 28 मार्च को दी और मार्च की तनखा आज 15 अप्रैल तक नहीं दी है। ओवर टाइम के पैसे तो 4-6 महीने बाद देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 15-20 की ही हैं।"

**कॉपर कनेक्शन श्रमिक :** "195-196 डी एस आई डी सी ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में फरवरी-अन्त में काम बन्द किया और बोले कि मार्च में काम देंगे लेकिन अब अप्रैल में कहते हैं कि 40 स्थाई मजदूरों को निकालेंगे।"

**किरायेदार** जब कमरा छोड़ते हैं तब तेखण्ड में कुछ मकान मालिक इस-उस आड़ में दो-तीन हजार रुपये अतिरिक्त देने को कहते हैं। दस अप्रैल को एक किरायेदार कमरा खाली करने वाला था तो उसे कहा कि तेरह महीने का बिजली का तथा सफाई का बकाया 2050 रुपये पहले दो। सफेद झूठ थी, बात धमकियों और पुलिस तक गई। मकान मालिक के 70 कमरों में रह रहे किरायेदारों तथा बगल के मकानों में रहने वाले किरायेदारों में चर्चाओं ने मकान मालिक की दादागिरी पर रोक लगाई। बिना अतिरिक्त 2050 रुपये दिये मजदूरों ने मकान मालिक के सामने कमरा खाली किया।■

# हरसूर्या हैल्थकेयर

प्लॉट 110-111 उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 650-700 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में आई वी कैनुला बनाते। बहुत अधिक निर्धारित उत्पादन के कारण हाथों में सूईयाँ बहुत चुभती, टेप लगा कर काम करो, मशीन बन्द नहीं होनी चाहिये। फैक्ट्री में जगह-जगह कैमरे। तनखा देरी से। गालियाँ।

राहत के लिये सितम्बर-अक्टूबर 2010 में एक यूनियन से जुड़े। स्थाई मजदूर से 2000 रुपये और कैजुअल वरकर तथा ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर से 1000 रुपये चन्दा कर यूनियन के लिये 4½ लाख रुपये से अधिक एकत्र।

कम्पनी ने कैजुअल वरकरों को ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर बनाया। एतराज पर फैक्ट्री में यूनियन प्रधान को 11 दिसम्बर को निलम्बित किया। विरोध में उत्पादन में ढील। कम्पनी ने एक-एक कर मजदूर नौकरी से निकाले और गेट पर दो बन्दूक वाले खड़े किये। पर गाली देना बन्द और तनखा समय पर देनी आरम्भ की।

मार्च 2011 में मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच तीन वर्षीय दीर्घकालीन समझौता हुआ। मजदूरों को कुछ और राहत..... मजदूर राहत की साँस ले भी नहीं पाये थे कि 8 अप्रैल को कम्पनी ने मजदूरों को उकसा दिया। एक स्टाफ वाला मजदूरों से बोला कि फैक्ट्री में यूनियन प्रधान बिक गया है। प्रधान ने स्टाफ वाले को टोका। विवाद। मैनेजमेन्ट ने प्रधान तथा एक अन्य मजदूर को निलम्बित कर दिया।

इस पर 8 अप्रैल को ही रात की शिफ्ट में मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। सुबह की शिफ्ट के मजदूरों को फैक्ट्री में प्रवेश नहीं करने दिया तो रात की शिफ्ट के मजदूर फैक्ट्री से नहीं निकले। कैन्टीन नहीं है, फैक्ट्री के अन्दर जमे 300-350 मजदूरों को साथी मजदूरों ने दीवार के ऊपर से भोजन पहुँचाया। फैक्ट्री के अन्दर और बाहर 72 घण्टे तक मजदूरों का दबदबा रहा। "बाहर निकलो-बाहर निकालो" के न्यायालय के आदेश। यूनियन के कहने पर 72 घण्टे से फैक्ट्री में रह रहे मजदूर बाहर निकले।

कम्पनी ने 2 के बाद 5, फिर 7 और फिर 4 को निलम्बित किया। फैक्ट्री के पास पार्क में मजदूर धरने पर। श्रम विभाग में तारीखें। मैनेजमेन्ट ने 7 को छोड़ कर बाकी सब द्वारा अन्दर आ कर काम करने की बातें की।

25 अप्रैल को उप श्रमायुक्त के कार्यालय में मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच समझौता वार्ता। समझौते के इन्तजार में 150 मजदूर। साँय 6 बजे पुलिस आई और तब दो कैन्टर गाड़ी फैक्ट्री के अन्दर माल भरने गई। पार्क में बैठे मजदूर दौड़ कर फैक्ट्री गेट पर पहुँचे। पुलिस ने लाठियाँ मार कर खदेड़ा। मजदूर सड़क के बीचोंबीच बैठ गये। और पुलिस बुला ली गई।

यूनियन लीडर आये। सड़क खाली कर पार्क में बैठने को कहा। यूनियनों की मीटिंग कर एक्शन लेंगे।

26 अप्रैल को सुबह 10 बजे से 300 मजदूर इन्तजार में। दो बजे 40 यूनियन लीडर आये। भाषण दिये। और बोले कि जो फैसला करें उसे मान लेना।

27 अप्रैल को यूनियन और मैनेजमेन्ट के बीच समझौता हो गया। यूनियन के एक बड़े लीडर ने 2½ बजे समझौता सुनाया : 7 को बाहर छोड़ कर बाकी मजदूर अन्दर जा कर काम करें...... मौजूद 250 मजदूर गुस्से में उबल पड़े। समझौता सुनाने वाले नेता को खरी-खरी सुना कर खदेड़ दिया। दूसरे बड़े नेता ने पुचकारने की कोशिश की तो मजदूरों ने उसे भी गाली दे कर भगा दिया। फैक्ट्री लीडरों और मजदूरों ने अलग से मीटिंग की। फँस गये हैं – फँसा दिये गये हैं की बात बिलकुल साफ हो गई थी। सात को बाहर छोड़ कर 28 अप्रैल को मजदूर फैक्ट्री में गये।

इन दो वर्षों में इस क्षेत्र में ही **रीको ऑटो, डेन्सो, सेन्डेन विकास, वीवा ग्लोबल......** वाले कटु-कड़वे अनुभव अब हरसूर्या हैल्थकेयर मजदूरों को भी हुये हैं। आज के हालात में राहत के लिये भी संगठित प्रयास कैसे करें? इस प्रश्न के उत्तर के लिये अनुभवों तथा विचारों पर आपस में चर्चायें बहुत जरूरी हैं।■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011